पुष्पा सिंह

कविता

मेरी नन्ही सी जान... तुझे पाकर मैं हो गयी हूँ धनवान...

जब पहली बार देखा तुम्हें तो मानो खुशियों का सैलाब आया हो दिल

मे और खामोश थी मेरी जुबान..

जब तुम्हें स्पर्श किया तो मानो एक सुकून हुआ मन मे जैसे सिर्फ़

मैं और तुम है बाकी सबसे अनजान....

जब तुम्हें देखती हू नींद मे मुस्कराते हुये तो मानो ऐसा लगता है

जैसे ये पल यहीं रुक जाये और बनीं रहे ये मुस्कान...

तुम्हारा अपने नन्हें हाथों - पैरों से यूँ अकेले खेलना मुझे भी गुदगुदा

देता है जैसे मानो तुम चाहते हो मेरे साथ मे खेलना....

तुम्हारे चहरे के अनेक भाव देखकर ऐसा लगता है जैसे तुम बहुत

कुछ चाहते हो मुझे समझाना और कहना...

धन्यवाद मेरी जान मुझे अपनी माँ चुनकर तूने पूरा किया है मेराच

मातृत्व का वरदान....

मेरी नन्ही सी जान तुझे पाकर मैं हो गयी हूँ धनवान...

देवेंद्र कुमार मिश्रा

माटी क़ी देह को ऐसा कसा कुम्हार ने
उसपर चन्दन का लेप, ऐसा रचा रचनाकार ने
माया बन गई देह तुम्हारी
जिसे देख मन भटके, मृग सा वन में
दुनियां बन गई स्त्री देह
जादू जगा दिया रचनाकार ने
मन को ठगा, तन को बौराया
चित्त को किया भ्रमित
देह क़ी लिखावट में कितने प्रेम कितने जीवन
उसपर सौलह श्रंगार का जलवा
जीना हुआ मुश्किल
काम छूटे न राम सधे
छोटे से जीवन में युगों युगों ने विस्तार लिया
रचने वाला खुद है मोहित
हमारा स्वाभाविक है होना सम्मोहित
भली लगे ये काम क़ी पीड़ा
जिसमें सुध बुध भूले जीवन क़ी
क्या कह दें तुम्हें रति

तुम हो साकार उपवन क़ी पुष्प सी कोमल, सुगन्धित
बहती नदी क़ी धार सी
उफ़नते यौवन क़ी मदमाती कहानी
प्यासा पनघट पर मांगे पानी
गजब दिया नेह देह को आकार प्रकार
तुममें ही सजने लगे, सपने होने लगे साकार

क्षमा करना अभी तारनहार
मन, चित्त की दशा प्यासी है
प्यासा है अभी मन मेरा
तुम्हारी रचना में डूबा हूँ रचनाकार
तुम निकाल सको तो निकालो
मेरा तो निकलना मुश्किल है
खिलते पुष्पों से भंवरो का जो है अनुराग
पतझड़ आने तक, न आये तो अच्छा
चलता रहेगा माटी से माटी का आग भरा अनुराग.